डेविस के अपरदन चक्र की संकल्पना पर आलोचनात्मक टिप्पणी / वर्जन

Rejuveation
(नवो-मेषण)
↓
अपरदन चक्र
में बाधा

→ डेविस के सामान्य अपरदन चक्र की संकल्पना में चक्र शब्द भ्रामक प्रतीत होता है क्योंकि चक्रीय संकल्पना के अनुसार अपरदन की क्रिया जहां से प्रारंभ होती है वहीं समाप्त होनी चाहिए। वहीं डेविस के अनुसार अपरदन की क्रिया उत्थित भूखंड से प्रभावित होकर समतलप्राय मैदान पर समाप्त होती है।

→ डेविस के अनुसार स्थलाकृति संरचना, प्रक्रम और अवस्था का प्रतिफल होता है। इन्होंने संरचना ~~&~~ प्रक्रम की अपेक्षा समय पर आधारित अवस्थाओं को अधिक प्राथमिकता दी। इनके अनुसार स्थलाकृति का विकास जैविक घटकों के समान युवा, प्रौढ़ और वृद्ध अवस्था में होता है। जहां जैविक घटकों के विकास की विभिन्न अवस्थाओं की एक निश्चित समयावधि होती है वहीं स्थलाकृति के विकास के विभिन्न अवस्थाओं की समयावधि को निश्चित नहीं किया जा सकता है। यहां तक की एक ही समय स्थलाकृति के विकास की तीनों अवस्थाओं से संबंधित विशेषताएं देखने को मिलती है जैसे कि नदी के अपवाह मार्ग में युवावस्था का संबंध पर्वतीय क्षेत्र से, प्रौढ़ावस्था का नदी की घाटियों से और वृद्धावस्था का मैदानी प्रदेश से संबंध होता है।

→ इनके अनुसार उत्थान की प्रक्रिया सामान्यतः अल्पकालिक और तीव्र गति से होती है जबकि वास्तव में उत्थान की प्रक्रिया न केवल दीर्घकालिक बल्कि अधिकांश समय मंद गति से होती है। इनका यह मानना था कि उत्थान के समाप्त हो जाने के बाद अपरदन की क्रिया प्रारंभ होती है जबकि पेंक के अनुसार उत्थान और अपरदन की प्रक्रिया साथ-2 होती है। ऐसी स्थिति में अपरदन चक्र के समाप्त होने के पहले ही उत्थान की प्रक्रिया होने पर अपरदन चक्र में बाधाएं उत्पन्न हो सकती है। जब स्थलाकृति अपने पूर्व अवस्था को पुनः प्राप्त कर लेती है तब नवोन्मेषण के कारण नवोन्मेषित स्थलाकृतियों का विकास होता है।

→ डेविस ने स्थलाकृतिक विकास की प्रक्रिया का वर्णन करते समय चट्टानी संरचना और संगठन को विशेष महत्व नहीं दिया जबकि अपरदन की दर को निर्धारित करने वाले कारकों में भूगर्भिक संरचना और संगठन का भी विशेष महत्व होता है। इनके अध्ययन का क्षेत्र USA का आर्द्र जलवायु प्रदेश था जबकि इन्होंने स्थलाकृतिक विकास की प्रक्रिया का वर्णन करते समय वनस्पति विहीन सतह को अध्ययन का आधार बनाया जबकि अपरदन की क्रिया को नियंत्रित करनेवाले कारकों में वनस्पति की सघनता का विशेष प्रभाव होता है।